

अरावली सफारी पार्क

चर्चा में क्यों?

हाल ही में देश भर से कई सेवानिवृत्त [भारतीय वन सेवा अधिकारियों](#) ने प्रधानमंत्री को एक ज्ञापन सौंपकर गुजरात और नूह के कुछ हिस्सों में [प्रस्तावित 10,000 एकड़ के अरावली सफारी पार्क परियोजना](#) का वरिध किया।

- उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि [पारिस्थितिकी-संवेदनशील क्षेत्र](#) में किसी भी हस्तक्षेप में वनोद्धार के बजाए ["संरक्षण और पुनर्स्थापन"](#) को प्राथमिकता दी जानी चाहिये।

मुख्य बंदि

- **अरावली सफारी पार्क:**
 - यह परियोजना दुनिया की सबसे बड़ी परियोजना होगी। वर्तमान में [अफ्रीका](#) के बाहर सबसे बड़ा क्यूरेटेड सफारी पार्क [शारजाह](#) में है, जो फरवरी 2022 में खोला गया था, जिसका क्षेत्रफल लगभग दो हजार एकड़ है।
 - इसका उद्देश्य [पर्यटन को बढ़ावा देना](#) तथा स्थानीय लोगों के लिये रोजगार के अवसर सृजित करना है।
- **पारिस्थितिकीय चिंताएँ:**
 - इस परियोजना से पारिस्थितिकी संवेदनशील क्षेत्र में [वाहनों का आवागमन](#) और नरिमाण कार्य बढ़ने से पर्यावरण को हानि हो सकती है।
 - उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि [अरावली की पहाड़ियाँ](#) गुजरात और नूह के जल-संकटग्रस्त क्षेत्रों के लिये [महत्वपूर्ण जल भंडार](#) के रूप में काम करती हैं।
 - पार्क में प्रस्तावित ["अंडरवाटर जोन"](#) जल स्रोत को प्रभावित सकता है, जिससे उस क्षेत्र में और जल की कमी हो सकती है, जिससे पहले से ही [केंद्रीय भूजल बोर्ड](#) द्वारा ["अतदिहति"](#) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- **कानूनी और पर्यावरणीय प्रतबंध:**
 - इस बात पर जोर दिया गया कि सफारी पार्क "वन" श्रेणी के अंतर्गत आता है, जहाँ पर्यावरण कानून वनों की कटाई, भूमिकी सफाई और नरिमाण पर सख्त प्रतबंध लगाते हैं।
 - उन्होंने [वन संरक्षण अधिनियम, 1980](#) के तहत सर्वोच्च न्यायालय और [राष्ट्रीय हरति अधिकरण \(NGT\)](#) के कई आदेशों का हवाला दिया, जो ऐसी गतिविधियों पर प्रतबंध लगाते हैं।
- **हरियाणा के वन क्षेत्र और स्थिरता पर प्रभाव:**
 - हरियाणा में भारत में सबसे कम वन क्षेत्र है और अरावली परवतमाला एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी बफर के रूप में कार्य करती है।
 - अधिकारियों ने चेतावनी दी कि क्षेत्र में खनन और मानव बस्तियों पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ देंगी, [सतत विकास लक्ष्यों \(SDG\)](#) का उल्लंघन करेंगी और दीर्घकालिक पारिस्थितिक स्थिरता को नुकसान पहुँचाएंगी।
- **पारिस्थितिकी संवेदनशील क्षेत्र:**
 - [पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय](#) की [राष्ट्रीय वन्यजीव कार्य योजना \(2002-2016\)](#) में यह प्रावधान किया गया था कि राज्य सरकारों को [पर्यावरण \(संरक्षण\) अधिनियम, 1986](#) के तहत [राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों की सीमाओं के 10 किलोमीटर के भीतर](#) आने वाले क्षेत्र को [पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र \(ESZ\)](#) घोषित करना चाहिये।
 - जबकि [10 किलोमीटर का नयम एक सामान्य सिद्धांत के रूप में लागू किया जाता है](#), इसके आवेदन की सीमा अलग-अलग हो सकती है। [10 किलोमीटर से परे के क्षेत्रों को भी केंद्र सरकार द्वारा ESZ के रूप में अधिसूचित किया जा सकता है](#), अगर वे पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण ["संवेदनशील गलियारे"](#) रखते हैं।

अरावली परवतमाला

- उत्तर-पश्चिमी भारत की अरावली परवतमाला, जो [वशिष्ठ](#) के सबसे पुराने [वलि परवतों](#) में से एक है, अब 300 से 900 मीटर की ऊँचाई वाले अवशिष्ट परवतों का रूप ले चुकी है।
- इसका वसितार [गुजरात के हमिमतनगर से शुरू होकर हरियाणा, राजस्थान और दलिली](#) (लगभग 720 कमी.) तक है।
- परवतों को दो मुख्य श्रेणियों में [वभाजित किया गया है](#)- सांभर सरिही श्रेणी और राजस्थान में सांभर खेतड़ी श्रेणी, जहाँ इनका वसितार लगभग 560 किलोमीटर है।
- दलिली से हरदिवार तक फैली अरावली की छपी हुई शाखा गंगा और सधु नदियों के जल निकासी के बीच वभाजन पैदा करती है

- यह एक वलति पर्वत है, जनिमें चट्टानें मुख्य रूप से वलति भूपरपटी से बनती हैं, जब दो अभिसारी प्लेटें पर्वतजनति गतिनामक प्रक्रिया द्वारा एक दूसरे की ओर गति करती हैं।
- अरावली की उत्पत्ता लाखों साल पहले हुई थी, जब भारतीय उपमहाद्वीप की मुख्य भूमि यूरेशियन प्लेट से टकराई थी। कार्बन डेटिंग से पता चला है कि पर्वतमाला में खनन किये गए ताँबे और अन्य धातुएँ कम-से-कम 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व की हैं।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/aravali-safari-park-1>

